

માર્ગ ના રૂ-પ્રાચીન ઇતિહાસ

मृग - ग्रन्थ संस्करण

→ किसी भी दृश्य की जू-पाइकू अवस्था (Geological Structure) की विविध
मानवी मिलते हैं। वाली घटानों की प्रक्रिया एवं
उसके कारणों की विवेचनीयता।

→ नमक है कि यहाँ से निर्माण हुआ है परतांग
या अप्रसारी गद्दाएँ परत बात है, जिससे 39 रु.
मुद्दा को निर्माण होता है। 2018-19 में 5100
लाख रु. को लिया जा कर विकल्प है कि इसका विषय
प्रत्येक है, 2018-19 में विकल्प है कि इसका विषय
विकल्प है, परन्तु इसका विषय है कि इसका विषय

→ द्वारा लोड किया जाता है।

→ भारत की जूँड़ी प्राचीन संस्कृत में प्रथितम जौहि

→ १९ आर प्रायद्वीप्य जारा मे आँखेन कुम
का-विषम पहाड़ पास बाली है, तो इसे
मिली भागी भागी अपातकी अपी

ज्ञान मदन भागी क्षेत्रकर्ता युवा का
नवीनतम प्रतिकृति-पहाना, ली छुलता है। इन
मूलवीय विशेषताओं को जापा भारत के दीन
युद्ध मारा है।

- 1) दिल्ली का प्राचीनीय पर्यावरण
 2) उत्तर की विश्वाल प्रवासी
 3) उत्तर मारुति का विश्वाल महानी

મારા એ રૂપાની ફોટોસ

- 1) આદ્ય મદાજાય (ફુરા પ્રતીક્રિયા) → આનિક્યણ ઓર
ઘાર ગાડ કેમ
- 2) ફુરાય મદાજાય (પ્રતીક્રિયાબાટું) → કુલા ઓર
વિશેષયન કેમ
- 3) દ્વિકિયણ મદાજાય (અનિક્યણ) → ફસ્ટલી મારું કે
બીજું ફાળ નથી મિલા)
- 4) આદ્ય મદાજાય → (અનિક્યણ), દુષ્કળ ઓર
અશીયાં, કેગ, ક્રાંતિકાની કેમ)

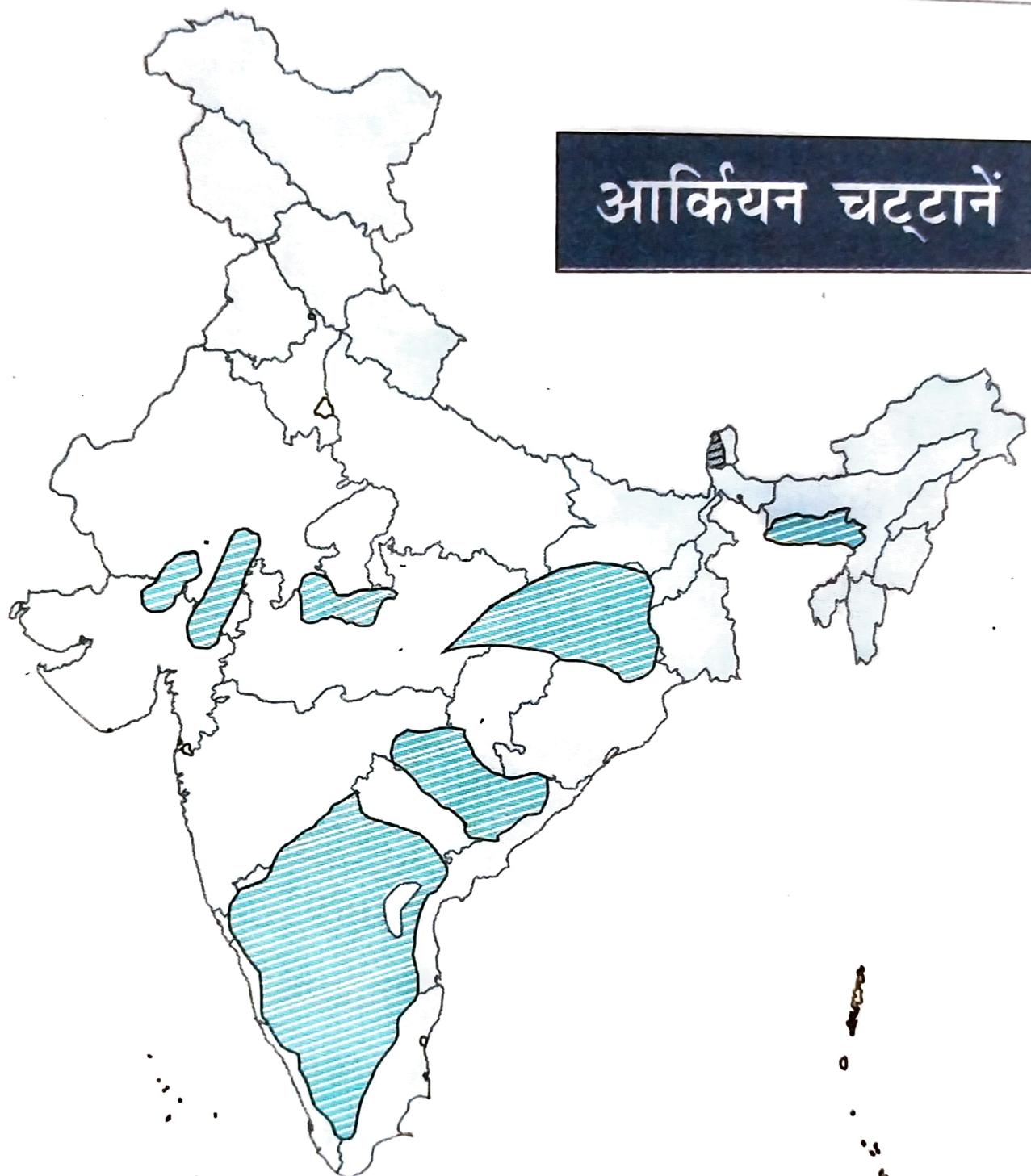
भारतीय पहाड़ों का विवरण

आर्कियन शहर → ओरेंजिन शहर → त्रिपुरा शहर
 → ग्रीष्मकालीन शहर → गोपनीय शहर → उद्दीपन शहर
 → दृश्यमान शहर की पहाड़ों → भवानी शहर
 (Archean Series)

* आर्कियन शहर की पहाड़ों :-

- नदी पृष्ठी के पठार हीन के फलस्वरूप होते हैं।
 ये प्राचीनतम् पहाड़ों के जबाबदे में मौजूद हैं।
- इनमें अधिकांशमात्रा का अमाव और अस्यधिक
 विवरण का लोरा इनका मौजूद रखते हैं।
 ये पहाड़ों के नीचे इस्ट बेसर
- आर्कियन पहाड़ों भारत की व्यानिय, राष्ट्रपदों
 की, गुरुर्वाचि, एवं एन - पहाड़ों में लोहा,
 तांबा, मूर्गाख, अमृक, लोगाहाइ, शीशा,
 बरता, पाँडी और रोगी जैसी व्याकुलता
 और अचार्यादि व्यानियों की प्रचुरता है।
- ये पहाड़ों मुख्यतः कागिय, तमिलनाडु,
 श्रीलंकापदश, मध्यपदश, शीशा, लालकुप
 एवं दालानागपुर पठार, दिक्षिण - पूर्व
 राष्ट्रसथान में धूपी खाते हैं। मत्स्य
 हिमालय की ओर से वृद्धि की दृष्टि की

आर्कियन चट्टानें



~~112915~~ ११२९१५ में वर्ष - १८१७ C. Dharwad Series) →

द्वितीय शताब्दी की पहाड़ी के अनुसार (Dharwad series) ४०

प्रतिक्रिया की विश्लेषणी के लिए अनुकूल होती है।

ମୁଲ୍ୟ ବିଦ୍ୟା, ଏକ ଜୀବି, ଏକ ପାଇଁ ଏକ ଜୀବି, ଏକ ଜୀବି

→ କୁଣ୍ଡଳ ଶ୍ରୀ ଶିଖାରୀ ପାତ୍ର ମହାନ୍ ବେଳାରୀ ମହାନ୍ ମହାନ୍

ନଥୀ ମହୁଦି ପିଲି ମ ପାତା ପୋତା ଦେ

→ દેશના પ્રધાન મંત્રી હિન્દુ હેમ્પ પણ

→ विलोपी के असाधनी विलोपी पर्याप्ति में विलोपी

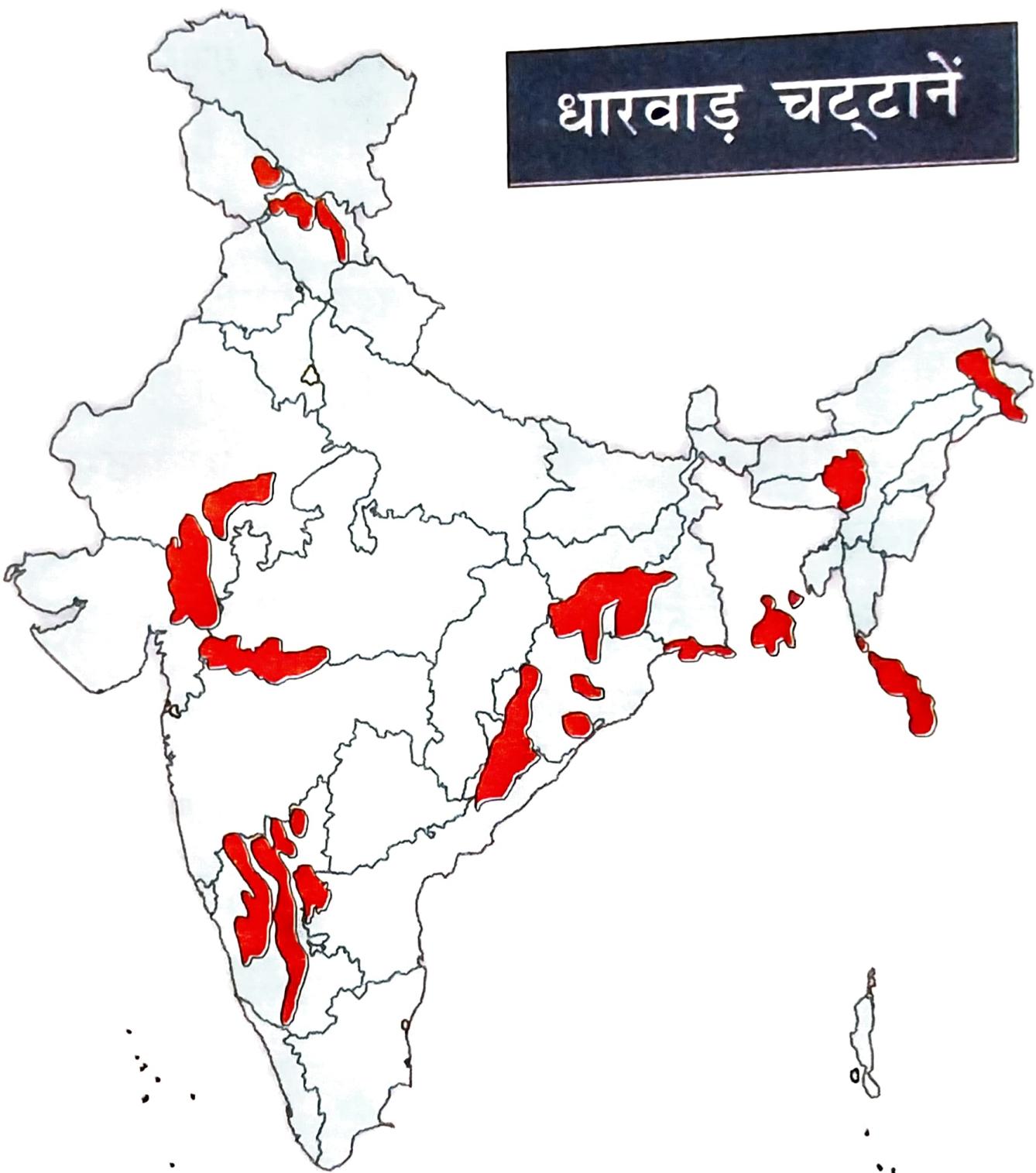
→ अथवा वास्तुपूर्वीकरण की प्रक्रिया अनुसार इसका नाम अनुसारी वास्तुपूर्वीकरण होता है।

~~ବାଧ - କାନ୍ତିଶ୍ଵର ମାର୍ଗ ଓ ଯୋଗ୍ୟ ପଣ୍ଡାଳ~~

→ ~~পাইচামু~~ হিমালয় দ্বারা, বাস্কুল, গোপাল
ৰ কুমার পরি পৌত্ৰা, হিমালয় পৰি, মে
স্থান ধৰি কু কু কু কু কু কু কু কু কু
অসম পুরুষ পুরুষ মাতৃ মে শিল্প পুরুষ
নাম কু কু কু কু কু কু কু কু কু

→ कल्पना की पहली आधिकारिक फैसले से संबंधित
महोरात्रि है। इसका अनुदेश व्याख्या एवं विवरण
(लोडा, लोगों, पहली बार मात्र है) दोनों विषयों का है।

धारवाड़ चट्टानें

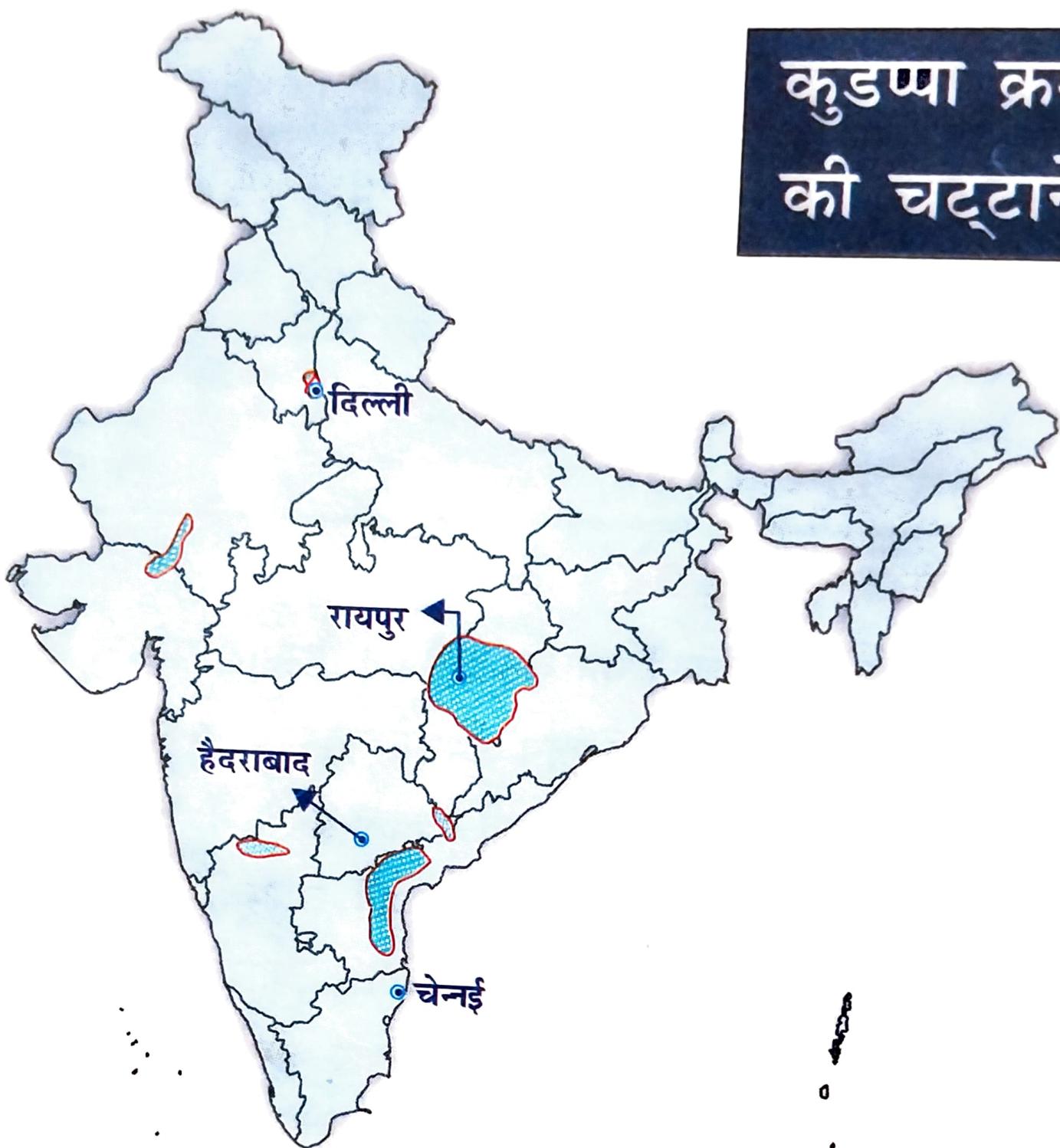


कुट्टाया रुप की पहानी

- असरवाहु रुप की पहानी के अपरण १७ निम्नांकों
 के खलैर० १९५५ कुट्टाया रुप (Cudappha Series)
 की पहानी का निर्माण हुआ था और इसकी
 प्रकार यह की परतदारी पहानी है।
 → इन पहानी में की जीवाशम्बुद्धि का उत्तम
 है, इलाकों के असर समय पूर्वी का जीवों का
 उद्घाग हो चुका था वह इन पहानी का
 निर्माण १९५५ आनंद प्रकाश के कुट्टाया लिल के
 नाम पर हुआ है, जहाँ इसका नाम - पहानी १९५५
 में दिया गया विस्तार है।
- ये पहानी मुख्यतः आनंद प्रदेश, मुख्य प्रदेश,
 राजस्थान, लिलगढ़ी एवं काशीराम के तुड़ी
 छोटी से पार्वी वाली है जहाँ इन पहानी की
 आजामदारी अधीन, पूरी राजस्थान क्षेत्र के इनका
 मुख्य प्रदेश है इन्हीं से दोष विस्तार है। राजस्थान की कुट्टाया
 पहानी द्वितीय अधीन के नाम की भी
 जानी जाती है।

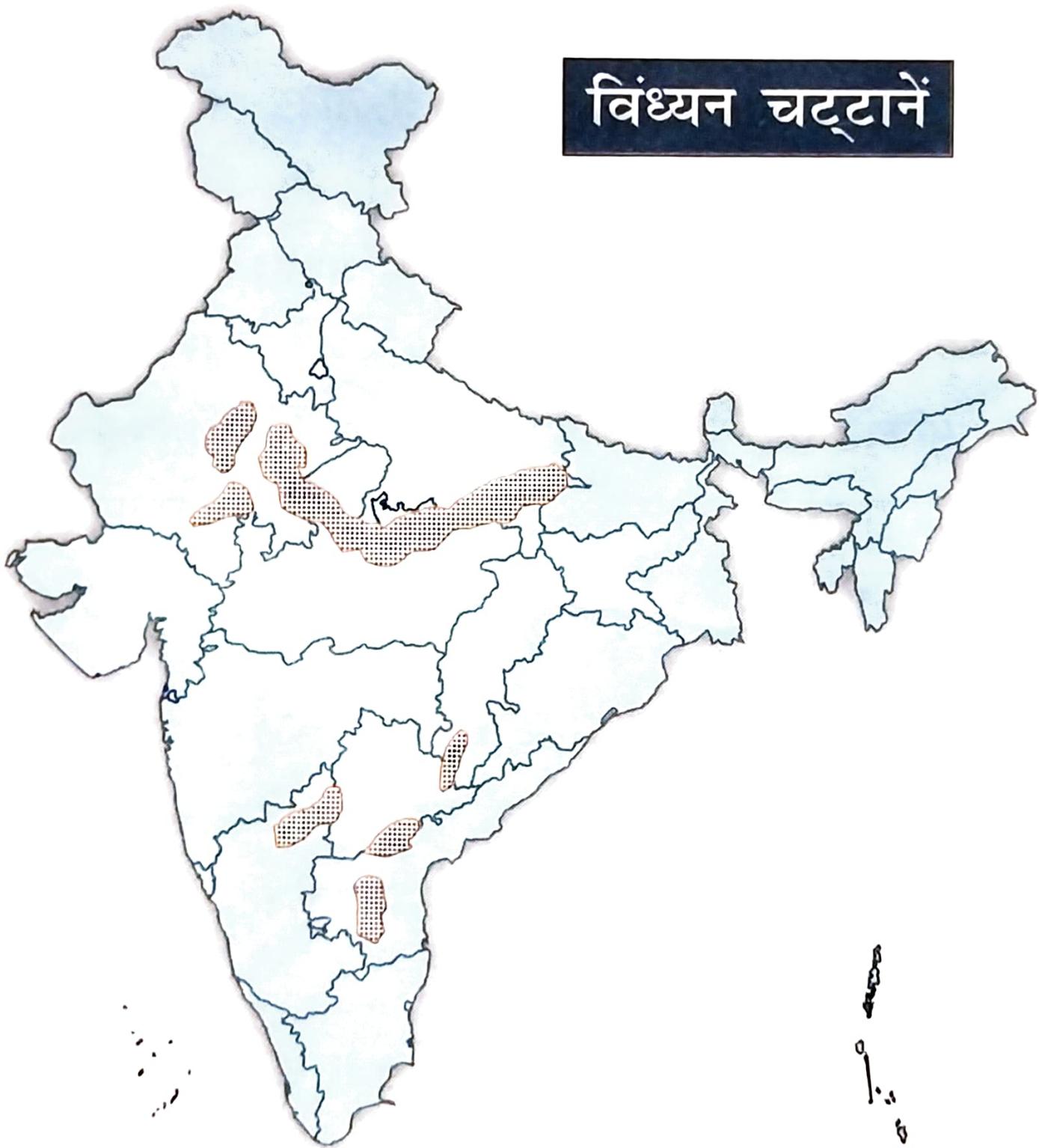
- ये बालुआ परथर, चुना - परथर, राजामरुद
 जमी की लिल प्रसिद्ध है इसे इसी
 पार्वी वाली है जो आनंद प्रदेश की जीवों
 की कुट्टाया लिल में लिल जीवों की अमान
 निर्माण है। इसी क्रम की पहानी की
 हुआ है।

कुड़प्पा क्रम की चट्टानें



ବିଷୟ କମ୍ବ କି ପାଇନ୍ : -

विंध्यन चट्टानें

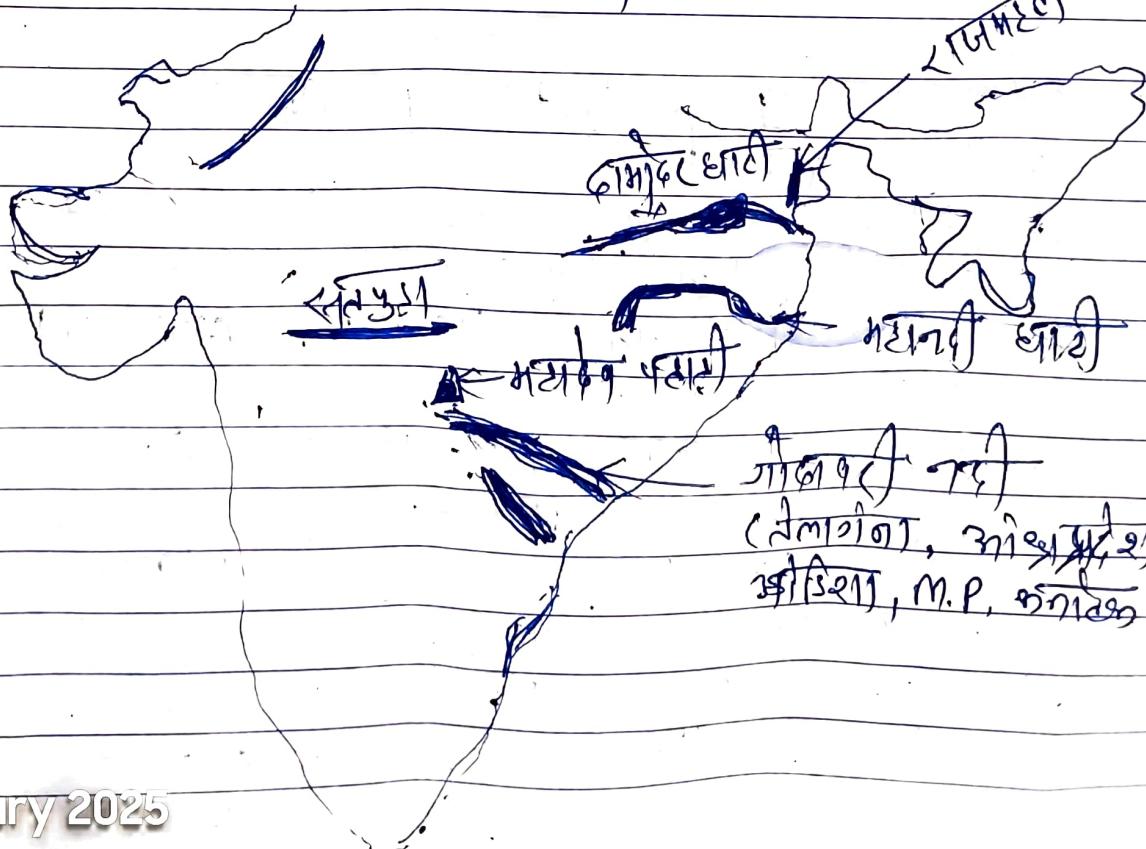


ପାଇଁବାନ୍ତି କମ୍ପ୍ୟୁଟର ପାଇଁବାନ୍ତି

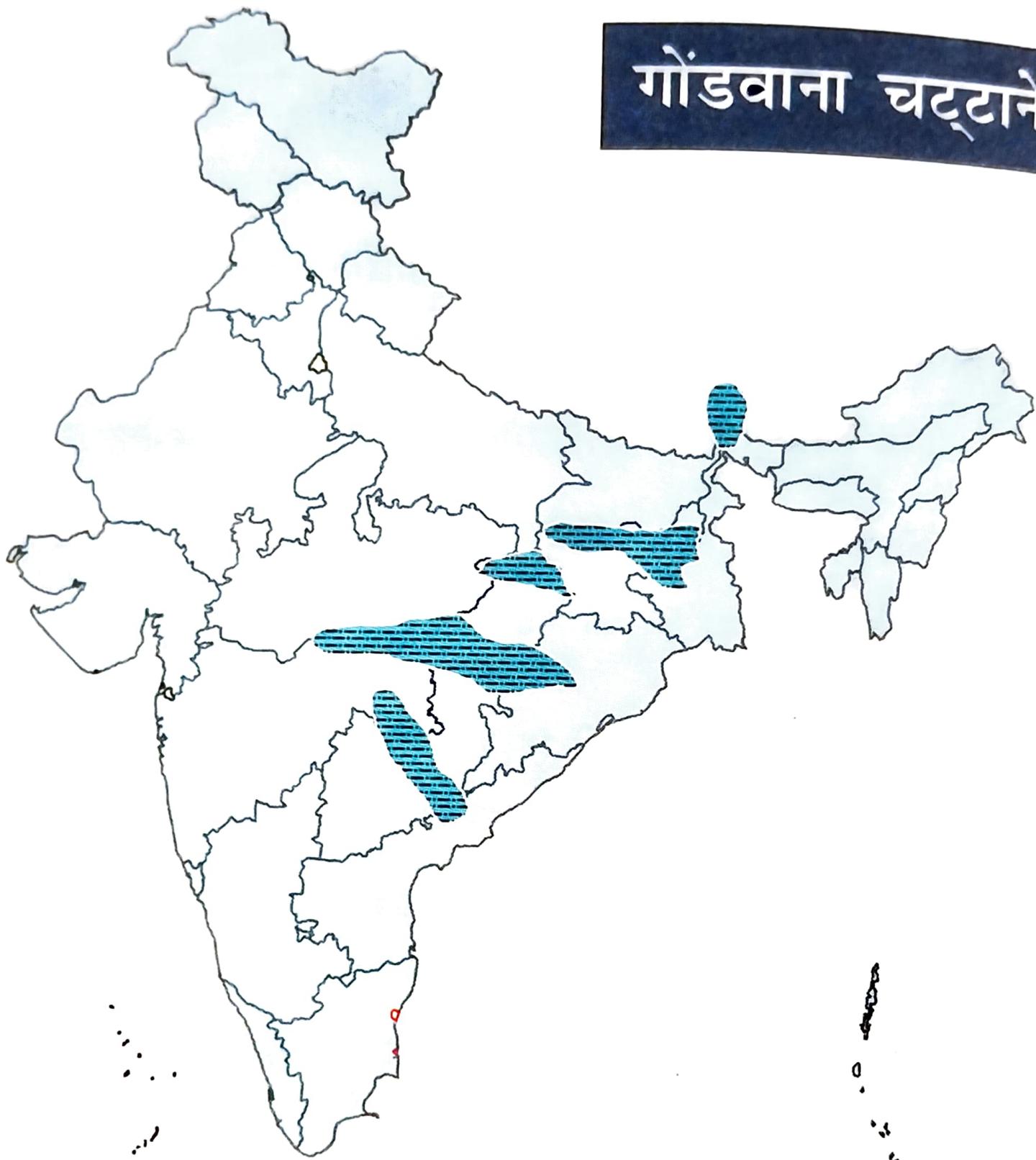
→ इन पूर्वाधारों का नियमित उपयोग दाकिनीपत्र से जुगत में पुरायक जुगत के अपेक्षित हुआ है। मारत का लगभग ७५% जीवन की जीवन

→ ये परंपराएँ पहाने हैं कि इनमें महात्मा एवं
राजा वाले जीवों के शक्तियाँ अत्यधिक
हैं। पहाने की विभिन्न विधियाँ में से निचे
परंपरा का विवरण दिया गया है।

→ दीमांड, महान्‌दि, शॉर रोडिंग्स व डेस्ट्री
स्पॉटिंग, नियम तथा गोट्टे जानियां दें।
पर्सनल सेलिंग शॉट्स इन प्रकार हों।

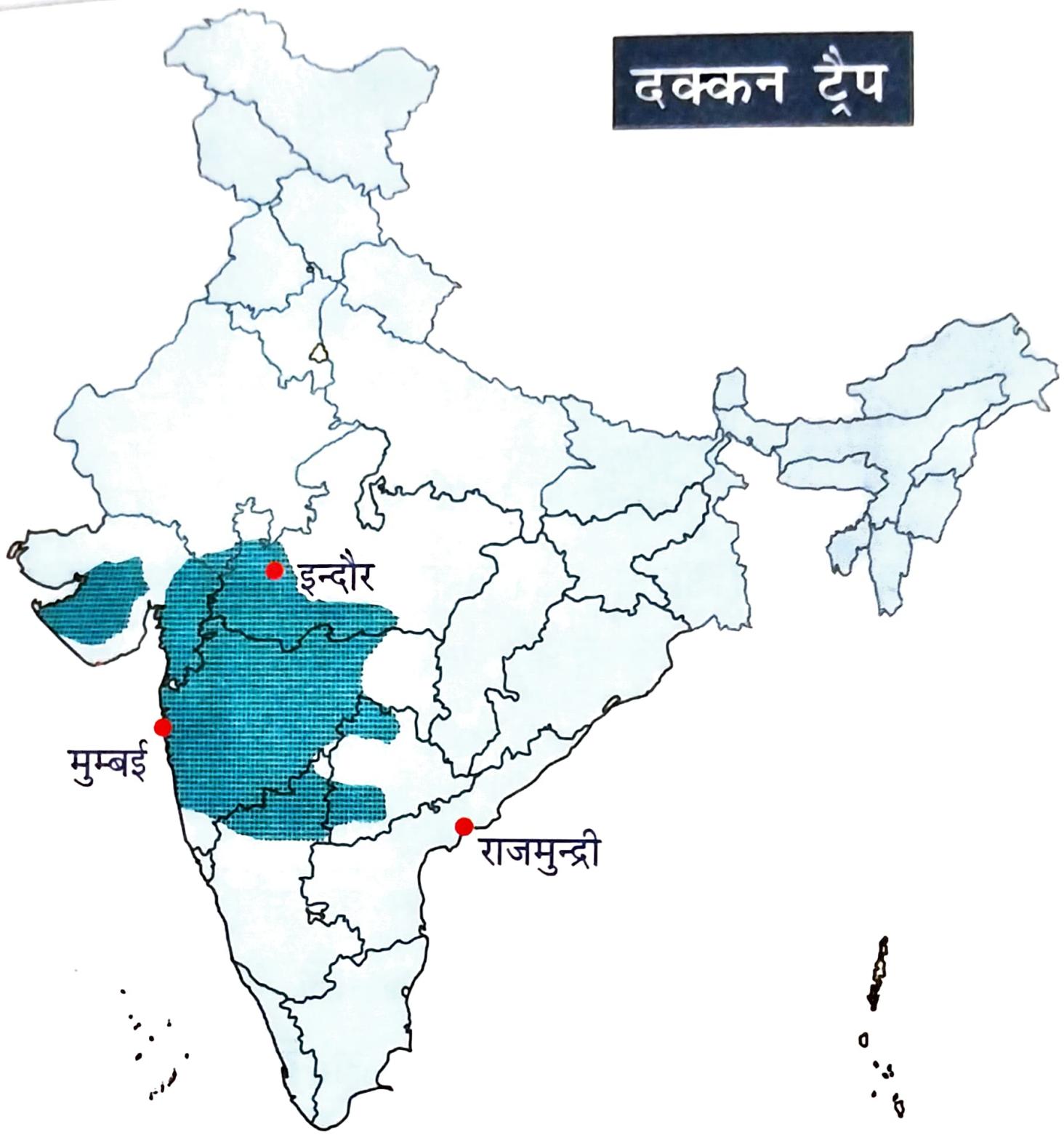


गोंडवाना चट्टाने



Isenoy 4 

दक्कन ट्रैप



प्राचीनी की पहान

- प्राचीनी की पहान का नियम इसीलिए पुरा से लेकर लोपोती हुगे की तरफ हुआ है।
- ये शील मुख्यतः हिमालय क्षेत्र में पाये जाते हैं, प्राचीनी की शील में क्षेत्र वर्षीय कीमी में कीमी है। क्षेत्र की शील में प्रदूषित पदार्थ भी पाये जाते हैं।
- यह क्षेत्र कश्मीर के क्षेत्र की में विकसित १९५ में पाया जाता है, जहाँ की लिलार की नाम से जाना जाता है।

चतुर्वर्षी की पहान

- चतुर्वर्षी की (Quaternary Series), की पहान की जीवानी क्लीस्टोसील तथा वर्षाग्रन्थि की पुरानी शील समिलित है। क्लीस्टोसील, क्षेत्र की शील का विश्वास, कश्मीर (हाई), शिल्प छाती, गुरुग्राम, नमदा, नाली, महानदी, महानदी, गोदावरी की जैवी विविधता है।
- यहाँ ओर असलज की आविरिक्षा प्रायद्विषय (नमदा, नाली, महानदी, गोदावरी, गुरुग्राम, गोदावरी, आवरी आवरी) नियम पाये जाते हैं।

करोव	सर्वांगी	निकौप है, जिसमें बांधा, अवरोह
तथा	जापरान	की रुक्ति की जाती है।

टर्शियरी चट्टानें

